पानी

सुकीर्ति भटनागर*

खेल नहीं यह भोले बालक,
जो बैठे हो नल खोल।
अरे बावले पानी जीवन,
है पानी तो अनमोल॥

इसकी तो हर बूँद कीमती,
न यूँ ही इसे बहाओ।
अपने टब को भर लो पहले,
फिर उसके बाद नहाओ॥

पानी बिन तो जीना मुश्किल,
यह धरती बंजर होगी।
नहीं मिलेगी रोटी-सब्ज़ी,
तुम बन जाओगे रोगी॥

यही धारणा मन में धारो,
न व्यर्थ बहे यह पानी।
यह तो है जीने का साधन,
न करो कभी मनमानी॥

* 432, अरबन एस्टेट , फ़ेज-1, पटियाला- 147002 (पंजाब)

Cover 2&3.indd 3 28-12-2015 AM 11:41:40